Lecture No- (09)

Name of the college - A.P.S.M. College Barauni, Begusarai L.N.M.U Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)

Deptt - A.I.H. & C

Lession / Plan for class - B.A part II Paper I (H)

Date - 24-04-2021

Name of the topic - बौद्ध युग से पूर्व स्मारक - स्तूप

भारत में वैदिक स्तूपों की परंपरा थी। यद्यपि उनके भग्नावशेष कम संख्या में उपलब्ध हुए हैं, तो भी उस परिपाटी के क्रम को नगण्य नहीं माना जा सकता है। वैदिक साहित्य में स्तूप के वर्णन के अतिरिक्त हिरण्य स्तूप का विवरण पाया जाता है। अग्नि ज्वाला की दीप्ति का वह महान पुंज है, जिससे विश्व की उत्पत्ति हुई। उसका प्रतीक सूर्य है। उसका सम्बंध सदा महापुरुषों से ही रहता है। लौरिया नंदनगढ़ का स्तूप भी उसका उसका एक उदाहरण है यह स्मारक स्तूप समझा जाता है जिसे वैदिक यज्ञ की यादगार में निर्मित किया गया था (vedic mound) यह चौरासी फीट ऊँचा तथा काफी विस्तृत क्षेत्र में फैला है। शास्त्री ने यह विचार व्यक्त किया है कि प्राचीन युग में चैत्य (वनचैतिय पवित्र वृक्ष) के पश्चात स्तूप की पूजा धार्मिक जगत में आरम्भ हुई। महाभारत (आदि पर्व - 150/33) देववृक्ष में चैत्य का उल्लेख किया गया है, क्योंकि देवता पवित्र वृक्षों पर निवास करते थे। वैशाली में भी स्तूप (चैत्य) बने थे, जिनका सम्बंध महान व्यक्तियों से था। संघ के लोग उनका सम्मान करते थे।

महापरिनिर्वाण सूत्र में वर्णन आता है कि बुद्ध ने आनंद को बतलाया था, कि चक्रवर्ती राजाओं की समाधि पर स्तूप बनाये जाते हैं। उसी प्रकार का स्तूप उनकी (बुद्ध) समाधि पर निर्मित होना चाहिए, जो चौराहे पर स्थित होता - "चातु महापथे रञ्ञो चक्कवत्तिस्स थूपं करोन्ति"

इससे स्पष्ट प्रकट होता है, कि उस वैदिक

P.T.O.

युग की प्रथा को बौद्ध लोगों ने अपनाया। बुद्ध के अवशेष पर अनेक स्तूप बनाए गए, जो उनकी मान्यता एवं लोकप्रियता को प्रकट करता है। अभिलेखों में इसे शरीर या धातुगर्भ कहा गया है। अवशेष पर हजारों स्तूप निर्मित हुए जो पूजा का विषय बन गया।

धातुगर्भ और स्तूप → भारतीय अभिलेख इस दिशा में अमूल्य सहायता करते हैं। उनके वर्णन से विदित होता है कि अमुक राजा ने बुद्ध के अवशेष (शरीर) पर स्मारक तैयार किया। इस प्रसंग में यह तर्क करना कठिन है कि उन नरेशों ने अवशेष कहाँ से प्राप्त किए। यहाँ विश्वास से ही काम किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में पीपरावा नामक स्थान पर एक स्तूप स्थित है, जो ईसा पूर्व पाँचवी सदी का है। उसी खुदाई से धातुपात्र (Relic casket) प्रकाश में आया है। जिस पर प्राकृत भाषा में निम्न लेख खुदा है —

इदं शरीर निधानं बुद्धस्य भगवत: शाक्यानाम्।

पश्चिमोत्तर प्रदेश के समीप बिजौर (बाजौर) के शिनकोट स्थान से अवशेष संदूक (casket) के ऊपरी भाग तथा भीतरी भाग पर लेख अंकित है, जो यूनानी राजा मिलिंद के समय (ईसा पूर्व दूसरी शती) का है। संदूक के ढक्कन के भीतरी भाग पर निम्न लेख है।

'भगवतु सके मुणिस सम संबुधस शरीर।'

इस लेख में बुद्ध के अवशेष को प्राण सहित कहा गया है इसका तात्पर्य यह था कि स्तूप (शरीर रहित) की पूजा करने पर आश्चर्यजनक फल मिलता है। लोगों को विश्वास था कि अवशेष की पूजा से चमत्कार प्रकट होता है। ईसा पूर्व पहली सदी में स्वात नदी की घाटी में खिबर एक ग्राम से अवशेष-पात्र मिला है, जिसके निचले भाग पर लेख खुदा है —

'इमे शरीर शाक मुणिस भगवतो बहुजन हितिए।

भारती कुमारी
24-11-2021

Scanned with CamScanner